।। पेट नाट को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

प्रस्तावना

जगतके ज्ञानी,ध्यानी,साधु,सिध्द,पीर,पैंगबर,तीर्थकर और जगतके नर नारी ये सारे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जो सतज्ञान जगत को देते और इस ज्ञानके आधार से सभी को परममोक्ष ले जाना चाहते इसको समझते नही उलटा यह सारे अज्ञानी माया में लग करके आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजजी के पराक्रम को जानते नही । इनमे के कई गुरु महाराज को भुरकी डालनेवाला कहते,फेनी कहते तो कुछ पेट भरने के लीये नट बना करके कहते । भुरकी मे भी आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभीको करारा ज्ञान दे के समझाया और आज जो हम पेटनाट का अंग देखनेवाले है । इसमें भी गुरु महाराज इन सभी को सतज्ञानसे समझाकर चेताते की,आप पहुँचे हुये संतोको पेटनाट याने पेट भरने के लीये बना हुआ साधु कहते ये झुठ है । साई के संत का वह सब सृष्टीका मालीक ही रहता और मालीक का वह संत रहता तो वह संत क्या? पेट का नट रहेगा? वह संत तो साहेब में ही लीन रहता । उसे माया से क्या लेना?

।। अथ पेट नाट को अंग लिखंते ।।

।। कुंडल्या ।।

त्रुगटी चडीया साध कूं ।। नूत जीमावे कोय ।।
वां सरभर तिहूँ लोक मे ।। जीम्या पुंन न होय ।।
जिम्या पुन्न न होय ।। बात मानो सब भाई ।।
पंडवा के दरबार ।। जिग मे किमत आई ।।
ध्रम अनंत सुखराम के ।। या सरभर नही होय ।।
त्रुगटी चडीया साध कूं ।। नूंत जीमावे कोय ।।१।।

लोग सतस्वरुपी संतो को पेट का नट याने पेट पालने का धंदा पकडा है ऐसा कहते है,तो संतो ने पेट पोसने का धंदा पाला है यह कैसे कहना? जो संत बंकनाल के रास्ते से त्रिगुटी में चढ गये है ऐसे साधु को जो मनुष्य आदर से निमंत्रण देकर जिमाते है तो उनके बराबरी का पुण्य तीनो लोको को भी भोजन करवाया तो भी नही होता । यह बात सब ही मान लो । पांड्वो के राजसुय यज्ञमें इसका पर्चा आया याने किंमत समजी । इस यज्ञ मे अनंत धर्म के बडे बडे अनंत साधु संत,अनेक राजा और अनगिणत दुसरे लोगो ने भोजन प्रसाद ग्रहन किया परंतु पंचायन शंख जरासा भी बजा नही और वाल्मित जो जात का श्वपच था परंतु त्रिगुटी पहुँचा हुवा था,उसके भोजन ग्रहन करते ही पंचायन शंख जोरसे बजा ।।।१।।

जन की गत निज बात रे ।। देव ही लखे न कोय ।।
काजी पंडित सिध्ध कूं ।। यांने गम नही होय ।।
यांने गम नही होय ।। पीर तिथंगर भाया ।।

सब ही सुण अवतार ।। गुरा बिन भेद न पाया ।।
सुखराम शेस शिव कहत हे ।। पद प्रख झिणी होय ।।
जन की गत निज बात रे ।। देव ही लखे न कोय ।।२।।

त्रिगुटी पहुँचे हुये संत की गती याने निजबात याने निजपराक्रम ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा शक्ती ये देव भी जानते नही । जब ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती ये देव ही इन साधू की गती जानते नही तो इनके ज्ञान के आधारवाले काजी,पंडीत,सिध्द,पीर,तिर्थंकर आदि इन साधु की पहुँच कैसे जानेगे? इनकी निजबात तो अवतारो में से जिस अवतार ने सतस्वरुप सतगुरु का भेद धारण किया उस अवतार ने सिर्फ जानी । ऐसे संत की गती शेषनाग और शंकर जो रातदिन रामस्मरण करते है वे भी जानते नही । वे कहते है की,ऐसे संत की परख बहोत ही झिनी रहती याने माया और पारब्रम्ह के ज्ञान समज के परे की रहती ।।।२।।

पेट नाट कहे मांडीयो ।। तम कोहो तोही होय ।।
ओर पाप कर भरत हे ।। जन पुन नाखे जोय ।।
जन पुन नाके जोय ।। अक्कल दुनिया कूं देवे ।।
करे मिनख सूं देव ।। सरण साहेब की लेवे ।।
पेट भरण के कारणे ।। देह राम धन जोय ।।
पेट नाट सुखराम के ।। तम कोहो तोही होय ।।३।।

जिस संतकी गती ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती जानते नही उनके बारेमें काजी,पंडीत, सिध्द,पीर,तिर्थंकर और जगतके लोग कहते है की,यह ज्ञान देनेवाले मनुष्यमें मेहनत करके पेट भरनेकी वृत्ती नही इसलिये साधूके नाम पर पेट भरनेका धंदा मांडा है । इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभीको कहते है की,इस संतने ज्ञान के नाम पे पेट भरने का धंदा मांडा है यह जो तुम कहते हो यह मुझे मान्य है परंतु यह समजो की,अगर मैने पेट भरने का धंदा मांडा है तो तुम सभी काजी,पंडीत,सिध्द,पीर,तिर्थंकर आदि ने भी यही धंदा मांडा है। आप तो सभी जीवो को होनकालके दु:खसे न निकालते दु:ख में ही रखते हो और पेट भरते हो मतलब दु:ख में याने पाप में रखने का पाप करके पेट भरते हो और मै होनकालके दु:खसे निकालकर सतस्वरुपके महासुखमें भेजता हुँ मतलब होनकालके दु:खमें याने पाप में से निकालकर सतस्वरुपके पुण्यके महासुख में भेजता हुँ । इसप्रकार पुण्य करके पेट भरता हुँ। ज्ञानसे सभी लोग,काजी,पंडीत,सिध्द,पीर,तिर्थंकर आदि सभी समजो की,मै आवागमन से मुक्त होने की अक्कल सभी जगतको देता हुँ और जो जीव निकलना चाहते उन्हें साहेबका शरणा देकर उन मनुष्योंको ब्रम्हा,विष्णु,महादेव, शक्ती इन देवतावोके परेका अमर परमात्मा देव बनाता हुँ । मै जीवो को मेरा छोटासा पेट भरने के बदले सारे सृष्टीका जो रामधन है वह देता हुँ । ऐसा महंगा धन देने के उपर भी

मैने पेट भरने का साधन शुरु किया ऐसा तुम कहते हो तो यह तुम्हारा कहना मुझे मंजुर है। ।।३।।

ज्ञान कहूं सो पेट नट ।। कण आ अणभे होय ।।
के म्हे सिवंरूँ राम कूं ।। भेद बताऊँ सोय ।।
भेद बताऊँ सोय ।। जीव ऊलझ्या सुळझाऊँ ।।
भ्रम मिटाया ग ढ चढया ।। के सुखदेवजी तोय ।।
ग्यान कहूं सो पेन नट ।। कन आणभे होय ।।४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मै कालके दु:खके भयसे मुक्त ऐसे सतस्वरुप देशका ज्ञान और वहाँ पहुँचनेका भेद देता हुँ और मै रात दिन ३५०००००० रोमावली से सतस्वरुप राम का स्मरण करता हुँ ओर माया,ब्रम्ह में उलझे हुये जीवो को सुलझाता हुँ तथा उनमे सतस्वरुप तत्त की प्राप्ती कराके उनकी हर से अखंडीत लिव लगा देता हुँ । उनके भ्रम मिटाता हुँ और उन्हें त्रिगुटी गढ पे चढाता हुँ ऐसे ज्ञान के भेद को पेट भरने का धंदा शुरु किया है ऐसा तुम कहते हो तो ये काल से निकालने का ज्ञान और भेद बताना यह जरासाभी पेट भरने के किंमत का धंदा है क्या ? यह तुम सतज्ञान से समजो ।।।४।।

पेट नाट किम जाणीये ।। बिना पेट किम होय ।।
समझ अरथ ओ दीजीये ।। ऊलट जाब दे मोय ।।
ऊलट जाब दे मोय ।। लोक तीनू म्हे देख्या ।।
बिना पेट किण जाग ।। समझ कुंणे नर पेख्या ।।
भजन करूं सूं पेट नट ।। कन आ भक्ति जोय ।।
पेट नाट सुखराम के ।। बिणा पेट कुण होय ।।५।।

ऐसे साधु को पेट पालने का धंदा किया यह कैसे कहना?जगत में सभी को पेट है । पेट भरना यह होनकाल पारब्रम्ह की रितही है। सभी जैसा पेट भरते वैसा मैं भी पेट भरता हुँ। इस तीन लोक चौदा भवन मे बिना पेट का कौन जीव है यह ज्ञान समजसे निर्णय लावो। तीन लोक चौदा भवन में बिना पेट का कोई जीव है ऐसा किसी ने भी देखा होगा तो मुझे बतावो । मै रातदिन उस साहेब की भक्ती और भजन करता हुँ । यह साहेब सभी का पेट भरता है ऐसा साहेब मुझमे प्रगट हुवा है फिर भी मै जगत के आधार से पेट भरता हुँ यह सतज्ञान से निर्णय करके मुझे जबाब दो ।।।५।।

कवत ।।

जन सिंवरे नीज नांव ।। ध्यान ब्रम्हण्ड मे लागा ।।
दुभद्या दुरमत डिंभ ।। भ्रम भांडा सब भागा ।।
आठ पोहर लवलिन ।। हरष साहिब दिस होई ।।

अेको ब्रम्ह विचार ।। ज्ञान निर्मळ दे सोई ।।
ईसे संत के मत्त कूं ।। पेट नाट कहे कोय ।।
सो नर तो सुखराम के ।। नरक ग्रामी होय ।।६।।

संत रातदिन अष्टौप्रहर निजनामका स्मरण करते है ऐसे संत का ध्यान ३ लोक १४ भुवन तथा ३ ब्रम्ह के परे के सतस्वरुप ब्रम्हंड में लगा है। उनकी दुविधा,दुर्मती,दंभपना तथा बडे भांडो में भरे हुये सभी भ्रम भाग गये है। वे साधु आठोप्रहर रातदिन साहेबमें लवलीन है तथा साहेब पाने के दिशा में हर्षित होकर रहते है । ऐसे संतो को एकमात्र सतस्वरुप ब्रम्ह का ही विचार रहता,उन्हें विकारी त्रिगुणी माया का विचार जरासा भी नही रहता और ऐसे संत जगत को काल से मुक्त होने का निर्मल अनुभव मत देते है ऐसे साहेब के ओर जीवो को पहुँचाने के मत को पेटनाट याने पेट भरने का उद्यम लगा रखा है ऐसे जो मनुष्य कहते है वे नरक ग्रामी याने नरकके गाँव में जानेवाले पक्के रहवासी है । इसमे फेर फार मत समजो ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के लोगो को कह रहे है ।।।६।।

पार ब्रम्ह की सरण ।। समझ गये बेठा सोई ।।
आन देव की बात ।। आस सपने नही होई ।।
चरचा बात गिनान ।। पेच साहेब दिस ल्यावे ।।
ज्यूं त्यूं कर समझाय ।। नांव इम्रत रस पावे ।।
ईसे संत की चाल कूं ।। पेट नाट कहे आण ।।
सो नर तो सुखराम के ।। खरो बिगुच्चो जाण ।।७।।

जो संत त्रिगुणीमाया यह नश्वर है,झूटी है,होनकाल पारब्रम्ह यह काल है और सतस्वरुप पारब्रम्ह यह कालसे मुक्त करानेवाला सच्चा देव है ऐसी उंडी समजसे निर्णय करके सतस्वरुप पारब्रम्ह साहेब के शरण में बैठे है और सतस्वरुप पारब्रम्ह छोडकर होनकाल पारब्रम्ह तथा उससे जनमे हुये मायावी ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती इन देवी देवतावों को सपने में भी मानते नही और जगत को कालके दु:ख से मुक्त करने के लिये साहेब के देश का ज्ञान,चर्चा और बाते बताते है और विकारी मायाके दु:खमें उलझे हुये को साहेब के सुख के दिशा में सुलझाने के लिये अपना कोई निजी स्वार्थ न रखते हुये ज्ञान का दाव पेच खेलते है और जैसे तैसे कोशिश करके समजाते है तथा जीवो को निजनाम का अमृत याने अगर होने का शब्द रस पिलाते है तथा ऐसे संत को उसका पेट क्या है? भुक क्या है? इसकी जरासी भी सुद नही रहती और आदर से न्योता देनेके बाद भी न्योता देनेवाले के यहा सहज में जिमना पसंद नही करते ऐसे संत के चाल को पेटनाट याने पेट भरने का उद्यम शुरु किया है ऐसा जो मनुष्य समजता है या कहता है वह पुरीतरह विकारी माया में बिघडा हुवा है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के लोगो को कहते है ।।।७।।

बादसाहा सुण भूप ।। ताहि छेद्र कोई गावे ।।
तांके शिर सुण मार ।। पडत छेडो नही आवे ।।
घर सो लुटयो जाय ।। आण प्यादा जु घेरे ।।
काळो मुख कराय ।। स्हेर दोळो सुण फेरे ।।
यूं जनकी नर बात रे ।। निरसी कहे कोई जाय ।।
वो दरगे सुखराम के ।। मार ब्होत बिध खाय ।।८।।

राज में सभी मनुष्यो का प्रतीपाल करनेवाला राजा या बादशहा रहता । ऐसे राजा या बादशहा के प्रती उसके राज का कोई भी मनुष्य उस राजा या बादशहा के प्रती हलके या शुद्र विचार करता या बोलता तो उसके सरपे अंत नही आता ऐसा न सहे जानेवाला भारी मार पड्ता। उसका घर लुटे जाता और राजा की फौज आकर उसे घेरती। उसका मुख काला करती और उसकी गधी अक्कल के कारण उसे गधे पे बैठाकर शहर के हर कोने मे चारो बाजू फिराते। इसीप्रकार सतस्वरुप साहेब के संत की बात है। ऐसे साहेब के संत को कोई शुद्र हलका जानकर उस संत के बारे में गधी समज करके गधी बातें करता उस मनुष्य को साहेबके दरगा में अंत नही आता ऐसे अनेक नाना बिधीके न सहे जानेवाले मार खाने पड्ते ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगतके लोगोको काजी,पंडीत , पीर,तिर्थंकर,सिध्दाई तथा अन्य सभी धर्मियो के लोगो को कह रहे है ।।।८।।

।। इति पेट नाट को अंग संपूरण ।।